अलग–अलग वैतरणी का सारांश

डॉ0 उमा श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग
राजकीय महिला महाविद्यालय
डी0एल0डब्ल्यू0, वाराणसी

शिव प्रसाद सिंह जी द्वारा रचित उपन्यास ~~वैतरणी~~ 'अलग अलग वैतरणी' में भारतीय गाँवों के प्रतिनिधि के रूप में 'करैता' गाँव का अत्यन्त यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत किया गया है। सजीव ग्रामीण परिवेश की ठनक पहचानने के बहाने आजादी के बाद भारतीय जीवन की विसंगतियों, कठोर सच्चाइयों से सीधा साक्षात्कार करने की कोशिश इस उपन्यास में की गयी है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के नये गाँव जमींदारी उन्मूलन से सन्दर्भित विकृतियों से युक्त होकर एक नया रूप धारण कर लेते हैं। जमींदारी प्रथा के उन्मूलन के बाद ग्रामीण जनता ने विशेषकर किसानों ने समझा था कि उनका भाग्य उदय होगा जिन्दगी आराम से कटेगी। अत्याचार एवं अनाचार खत्म होंगे लेकिन उनकी आशा–निराशा में बदल गयी पहले जमींदार अत्याचार करते थे लेकिन अब उनका स्थान छुटभइयों ने ले लिया है। जो पहले जमींदारों के बूटों से रौंदे जाते थे। अब छुटभइये गोल बनाकर अपने से कमजोरों, गरीबों को सताते हैं लूटते हैं। पुलिस व्यवस्था में भी कोई बदलाव नहीं हुआ। भूतपूर्व जमींदार, छुटभइये, समाज के अगुवा, भ्रष्ट सरकारी अफसरों, व्यापारियों सबने मिलकर एक नहीं अनेक नरकों का निर्माण कर दिया है। ग्रामीण जीवन में एक नहीं

अनेक वैतरणी बहने लगी है जिस प्रकार वैतरणी नदी कष्ट सूचक है उसी प्रकार करैता गाँव में भी अलग–अलग कष्ट एवं समस्यायें हैं जिन्हें पार करना अत्यन्त कठिन है। गाँव की इसी अवस्था का चित्रण इस उपन्यास में हुआ है।

उपन्यास का कथानक करैता गाँव की कहानी कहता है। जो गाजीपुर जनपद में स्थित है। आजादी के बीस वर्ष हो गये हैं. फिर भी यह गाँव अनेक परम्परागत रूढ़ियों से बंधा है। करैता में असकामिनी देवीधाम में हर वर्ष मेला लगता है जहाँ पर निःसन्तान स्त्रियाँ पुत्र कामना हेतु आती है और मनौतियाँ मानती हैं। जैपाल गाँव का एक सम्मानित व्यक्ति है वह छावनी में रहता है लेकिन उसका बेटा बुझारथ जिसमें बहुत से दुर्गुण हैं करैता में ही रहता है। बुझारथ की पत्नी कनिया अत्यन्त नेक धैर्यशाली एवं त्यागमयी है। परिवार के लिए उसका त्याग अकथनीय है। बुझारथ अपने पिता के कर्जदूत धरमू सिंह पर कर्ज न चुकाने का आरोप लगाकर उसकी सम्पत्ति कुर्क करने लगता है। लेकिन विपिन के सहयोग से धरमू सिंह की सम्पत्ति कुर्क होने से बच जाती है। इसमें तीन पात्र शशिकान्त देवनाथ और विपिन पढे लिखे युवक है तीनों के अन्दर ग्राम विकास की भावना है। ये लोग करैता गाँव में सुधार करने के लिए कटिबद्ध हैं। अन्तः में तीनों के प्रयास विफल हो जाते हैं और वे गाँव छोड़कर चले जाते हैं। ग्राम सुधार की सारी योजनाएं धरी की धरी रह जाती हैं।

गाँव का एक चर्चित व्यक्ति जग्गन मिसिर जिसके बड़े भाई का स्वर्ग पास हो गया है वह अपनी भाभी के साथ पति–पत्नी की तरह रहता है लेकिन इस बात का खुलासा नहीं करता।

खलील मिया एक काश्तकार है बेटी की शादी में देवी चौधरी के यहाँ कुछ जमीन गिरवी रख देते हैं देवी चौधरी उसकी जमीन का बेच देता है और बेइमानी पर आता है। खलील मिया अपमान सह कर गाँव छोड़कर चले जाते हैं।

इस प्रकार करैता गाँव विविध समस्याओं से ग्रस्त है। दबंग किस्म के व्यक्ति गाँव में हावी है। गरीब व्यक्ति इनके शिकार है। गाँव में इस कदर अव्यवस्था व्याप्त है कि गाँव के अच्छे–अच्छे लोग शहर पलायन कर रहे हैं।

'अलग अलग वैतरणी' मनुष्य के किसी न किसी रूप में निर्वासन की करूण कहानी बताता है। अपनी उच्च शिक्षा का उपयोग गाँव की मिट्टी को देने के लिए उत्साह से विपिन की प्रतिक्रिया इस प्रकार है।" मारो साले गाँव को गोली। साल भर तक मैंने इस गाँव में रहकर जान लिया है कि यहाँ किसी भले आदमी का रहना मुश्किल है। यह एक जीता–जागता नरक है, जिसमें वही आता है जिसके पुण्य समाप्त हो जाते हैं। चारों ओर कीचड़, बदबूदार नाबदान, जहरीली मक्खियाँ–इसके बीख भूखमरी, डरावनी हड्डियों के ढाँचे, बीमारी से फूले पेट वाले छोकरे, घरों में बन्द आपाद मस्तक डूबी औरत, जो एक–दूसरी को खुलेआम चौराहे पर नंगियाने में ही सारा सुख और खुशी पाती हैं, धुँधवाते मन के अपाहिज जैसे नवयुवक, जो अँधेरी बन्द गलियों में बदफेली करने का मौका ढूँढ़ते फिरते हैं, हारे–थके प्रौढ़ जो न गृहस्थी के जुये का उतार पाते हैं, न उसमें उत्साह से जुट पाते हैं। मौत का इन्तजार करते बुड्ढे अपने ही बेटे–बेटियों से उपेक्षित बिलबिलाते रहते हैं– यही है न हमारी जन्मभूमि करैता।"

इस प्रकार विपिन ने जो नरक देखा, वह उससे दूर भागना चाहता है। इसमें इस बात का भी खुलासा किया गया है कि गाँव में जो कुछ अच्छा है वह शहर चला जा रहा है। जग्गन मिसिर का यह कथन इस बात को पूरी तरह स्पष्ट कर देता है वे कहते हैं, "हमारे गाँवों में आजकल इकतरफा रास्ता खुला है। निर्यात। सिर्फ निर्यात। जो भी अच्छा है, काम का है, वह यहाँ से चला जाता है। अच्छा अनाज, दूध, घी, सब्जी जाती है। अच्छे मोटे–ताजे जानवर, गाय, बैल, भेंड़े–बकरे जाते हैं। हट्टे–कट्टे मजबूत आदमी जिनके बदन में ताकत है, देह में बल है, खींच लिये जाते हैं पल्टन में, पुलिस में, मलेटरी में, मिल में। फिर वैसे लोग, जिनके पास अक्ल हैं, पढ़े–लिखे हैं यहाँ कैसे रह जाएंगे? वे जाएंगे ही। जाना ही होगा"

'अलग–अलग वैतरणी' का सारा वातावरण, अकाल, सूखा और चिलचिलाती धूप से भरा पड़ा है यहाँ के मेले, त्यौहार, स्कूल, सामूहिक जीवन के अन्य माध्यम सब तेजी से अपनी जीवंतता और शान खोते जा रहे हैं। उपन्यास के माध्यम से विभिन्न समस्याओं को दिखाकर निश्चित ही उपन्यासकार गाँवों की स्थित में सुधार लाना चाहते थे क्योंकि यह धरती अपने वास्तविक स्वरूप में गाँवों में रहती है। गाँवों में रहने वाले लोग ही धरती से अन्न और फल–फूल पैदा करते हैं जिससे विश्व का भरण–पोषण होता है यदि गाँव नष्ट होगे तो विश्व स्वतः नष्ट हो जायेगा। अतः गाँवों की और ग्रामीण सभ्यता की रक्षा हो ही चाहिए। गाँवों में परिवर्तन का प्रयत्न आवश्यक है इसके लिए ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा जैसी बुनियादी जरूरते सुलभ हो तथा गाँवों के विकास से सम्बन्धित योजनायें क्रियान्वित की जाय।